आलोकवृत्त

आशीर्वचन

श्रीमती महादेवी वर्मा

जिस प्रकार आलोक का आधार किसी दिशा में उदय होकर भी सब दिशाओं को आलोकित कर देता है, उसी प्रकार युगपुरुष एक देश-काल में उत्पन्न होकर भी सार्वभौम तथा सार्वकालिक हो जाते हैं।

युग के क्रान्तिद्रष्टा बापू भी भारत के क्षितिज पर उदय होकर सार्वभौम तथा सार्वकालिक ज्योतिस्तंभ रहेंगे । उनका जीवन-वृत्त सबका है, किन्तु सबने अपनी-अपनी दृष्टि के रंग से रंगमय करके उसे शब्दायित किया है । 'संभवामि युगे-युगे' में जीवन-मूल्यों के जिस नवीकरण का संकेत है, वह गाँधी-युग में सम्पूर्णता के साथ साकार हुआ है । भारतीय संस्कृति में सनातन जीवन-मूल्यों के आधार सत्य और अहिंसा ही रहे हैं, जिनके अभाव में मानवीय सम्बन्ध अर्थहीन हो जाते हैं । सत्य बुद्धि की चरम उपलब्धि है तथा अहिंसा हृदय की और ये दोनों अपने प्रयोगात्मक रूप में विविध और प्रभविष्णुता में युग-युगान्तर व्यापी रहे हैं ।

बापू ने इनका समन्वय कर उसे जीवन की सुरभि और मानवता का रक्षा-कवच दोनों बना डाला । ये दोनों प्रवृत्तियाँ विद्युत् के घनात्मक तथा ऋणात्मक तारों के समान मिलकर ही आलोक की सृष्टि करती हैं ।

कृती कवि गुलाब खंडेलवाल ने 'आलोकवृत्त' में उसी साकार आलोक की कथा को छान्दायित किया है । यह गाँधी-युग का अभिलेख भी है और युग-पुरुष गाँधी का स्मृत्यर्चन भी ।

कवि गुलाबजी छायावाद युग के कृती हैं, अतः उनकी रचना में तथ्य भाव-समुद्र की तरंग के समान आते हैं । कहीं-कहीं कामायनी की पंक्तियों का स्मरण हो आना भी स्वाभाविक है ।

भगवान बुद्ध जैसे भारत से निर्वासित होकर अन्य देशों में स्थापित हुए, वैसी ही आशंका कई दिशाओं में गाँधीवाद के सन्दर्भ में भी उठाई जा रही है।

गाँधीवाद धर्म का सम्प्रदायवाद न होकर जीवन-धर्म है, दर्शन का मतवाद न होकर मानव-दर्शन है और केवल कर्मयोग न होकर सत्य तथा अहिंसा की ऐसी सक्रियता है, जो व्यष्टि को समष्टि से जोड़ती है।

'आलोकवृत्त' यह तथ्य स्पष्ट कर सके ऐसी कामना स्वाभाविक है।

१५-८-७५ --- महादेवी वर्मा